"अहिंसा व अणुव्रत के मायने एक"

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 2 अक्टूबर, 2009।

"सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा दिवस मनाया जा रहा है। व्यावसायिक बुद्धि सब जगह कार्य कर रही है। एक दिन अहिंसा दिवस मना लिया बाकी दिन हिंसा के कार्य करते रहें तो अहिंसा दिवस मनाने का औचित्य कैसे सिद्ध होगा।"

उक्त विचार अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्वभारती एवं अणुव्रत न्यास के संयुक्त अधिवेशन के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अहिंसा और अणुव्रत अलग नहीं है। अणुव्रत का अर्थ नैतिकता है। नैतिकता के बिना अहिंसा सिद्ध नहीं हो सकती और अहिंसा के बिना नैतिकता प्रतिष्ठापित नहीं हो सकती।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि अणुव्रत आचार संहिता का प्रथम सूत्र है मैं निरपराध प्राणी की हत्या नहीं करूंगा का संकल्प ही सही रूप में अहिंसक चेतना को व्यापक बना सकता है।

साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा ने फरमाया कि गांधी दर्शन और अणुव्रत दर्शन आज के युग की मांग है। दोनों ही दर्शनों ने मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाई है। आचार्य तुलसी न धर्म को सम्प्रदायकवाद के कटघरे से निकलकर अणुव्रत के रूप में मानव धर्म की प्रतिष्ठापना की। अणुव्रत की चर्चा ही नैतिकता के पाठ से शुरू होती है।

युवाचार्यप्रवर ने परिषद के सभी सदस्यों को अहिंसक चेतना के जागरण का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व मुख्य सचिव राजस्थान सरकार श्री मीठालाल मेहता ने कहा कि तुलसी भविष्यदृष्टा थे। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति प्रोटोन, इलेक्ट्रान एवं न्यूट्रान जैसे सूक्ष्म तत्वों से हुई है। वैसे नैतिक ब्रह्माण्ड का स्वरूप अणुव्रत से ही निखर सकता है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में समागत बीकानेर सांसद श्री अर्जून मेघवाल ने कहा कि मेरे जीवन को अणुव्रत के छोटे–छोटे व्रतों ने बहुत प्रभावित किया है। मैं आज भी अणुव्रत के मूल्यों के प्रति जागरूक रहता हूं। मैं चाहता हूं कि समाज चरित्रवान बने और देश का विकास हो। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिवृंद द्वारा बदले युग की धारा गीत के साथ हुई। अतिथियों का स्वागत महामंत्री श्री मगनचंद जैन ने किया। संयोजकीय वक्तव्य में डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने अणुव्रत आंदोलन के नींव के पत्थर बने जैनेन्द्र कुमार, देवेन्द्र कर्णावट, मोतीभाई रांका आदि को याद करते हुए अणुव्रत को आंदोलन का स्वरूप देने का आह्वान किया।

अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. छगनलाल शास्त्री ने अणुव्रत को देश का भविष्य बतलाते हुए देश का हित अणुव्रत के विस्तार एवं प्रसार से संभव है। इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक पुरस्कार 2009 को वरिष्ठ लेखक डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी को दिये जाने की घोषणा की।

बरमेचा को अणुव्रत सेवी सम्मान

स्थानीय अणुव्रत समिति के संरक्षक एवं वरिष्ठ समाजसेवी श्री विजयसिंह बरमेचा को अणुव्रत सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया। अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में हुए विशेष समारोह में बरमेचा को निरंतर अच्छा कार्य करने तथा समर्पित भाव से अणुव्रत के क्षेत्र में कार्यरत रहने पर यह सम्मान दिया गया। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश सोनी का भी सम्मान किया।